पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
अंजनी मिश्रा

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

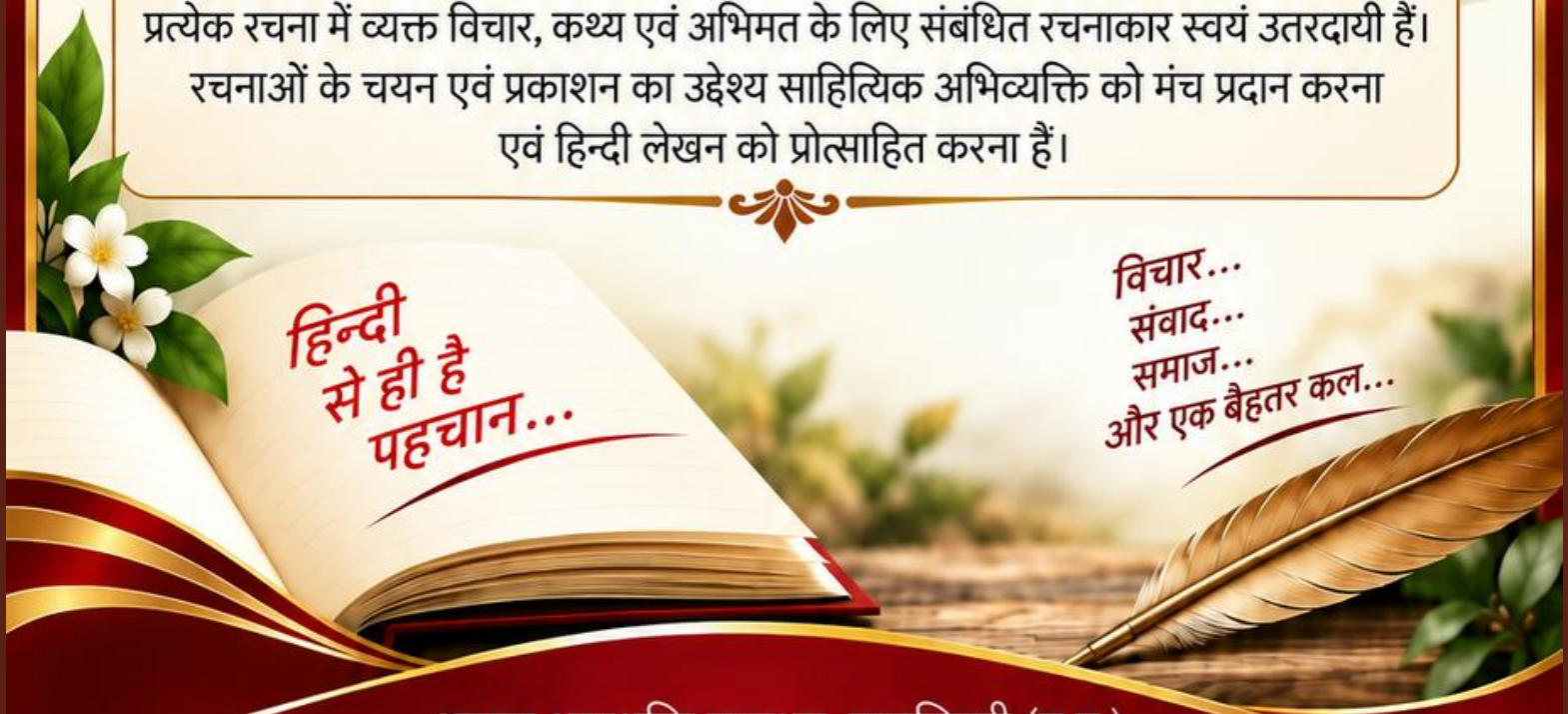

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – अंजनी मिश्रा

नारी

शक्ति, अस्तित्व और समाज की धुरी

नारी : शक्ति, अस्तित्व और समाज की धुरी

भारतीय संस्कृति में कहा गया है— “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।” अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है। भारतीय चिंतन में नारी को केवल किसी रिश्ते की भूमिका तक सीमित नहीं किया गया, बल्कि उसे सृष्टि, शक्ति, करुणा, संवेदना और जीवन की निरंतरता का आधार माना गया है। किंतु नारी का वास्तविक सम्मान केवल उसकी पूजा करने में नहीं, बल्कि उसे समान मनुष्य के रूप में स्वीकार करने, उसके अधिकारों का सम्मान करने और उसके निर्णयों को महत्व देने में निहित है।

नारी के व्यक्तित्व को किसी एक परिभाषा में बाँधना संभव नहीं। वह सृजन की शक्ति है, वात्सल्य की छाया है, संघर्ष की प्रतिमूर्ति है, अन्याय के विरुद्ध उठती हुई आवाज़ है और आधुनिक समय में आत्मनिर्भरता की पहचान भी है। समय के साथ उसकी भूमिका बदली है, लेकिन उसके सामने उपस्थित अनेक प्रश्न आज भी समाज के लिए विचारणीय हैं।

सृष्टि और वात्सल्य का रूप

नारी के अस्तित्व का सबसे सहज और स्वाभाविक पक्ष सृजन है। गर्भ में एक नए जीवन को धारण करने से लेकर उसके पालन-पोषण तक, नारी जीवन की निरंतरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उसकी ममता केवल मातृत्व तक सीमित नहीं रहती; वह परिवार और समाज के अनेक रिश्तों को संवेदना और आत्मीयता से जोड़ती है।

माँ, बेटी, बहन, पत्नी या किसी अन्य सामाजिक भूमिका में नारी रिश्तों को सँवारती है। वह परिवार की भावनात्मक धुरी बनकर सुख-दुःख में साथ खड़ी रहती है। उसके त्याग और समर्पण को अक्सर सहज मान लिया जाता है, जबकि इसके पीछे उसके अपने समय, श्रम और इच्छाओं का भी योगदान होता है।

इसलिए नारी के वात्सल्य और त्याग का सम्मान तभी सार्थक होगा, जब उसके अपने व्यक्तित्व और आकांक्षाओं को भी समान महत्व दिया जाए।

इतिहास : गौरव से संघर्ष तक

इतिहास के पन्नों पर नारी की स्थिति एक समान नहीं रही। भारतीय परंपरा में गार्गी, मैत्रेयी और अपाला जैसी विदुषियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने ज्ञान और शास्त्रार्थ के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। यह तथ्य बताता है कि भारतीय समाज के कुछ ऐतिहासिक चरणों में महिलाओं की बौद्धिक सहभागिता के लिए अवसर मौजूद थे।

समय के साथ सामाजिक संरचनाओं और विभिन्न कुरीतियों ने महिलाओं के जीवन को प्रभावित किया। बाल विवाह, सती प्रथा और पर्दा प्रथा जैसी व्यवस्थाओं ने अनेक महिलाओं की स्वतंत्रता और शिक्षा के अवसरों को सीमित किया। कई बार नारी को व्यक्ति के रूप में देखने के बजाय सामाजिक परंपराओं और रूढ़ियों के दायरे में बाँध दिया गया।

लेकिन संघर्ष के इसी दौर में परिवर्तन की चेतना भी जन्म लेती रही। राजा राममोहन राय, ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले जैसे समाज सुधारकों ने महिला शिक्षा और सामाजिक सुधार के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। स्वतंत्रता आंदोलन में भी महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी निभाई और यह सिद्ध किया कि राष्ट्र-निर्माण में उनकी भूमिका किसी भी दृष्टि से कम नहीं है।

शक्ति और शौर्य

नारी को केवल कोमलता और करुणा का प्रतीक मानना उसके व्यक्तित्व के दूसरे पक्षों को अनदेखा करना होगा। आवश्यकता पड़ने पर वही नारी संघर्ष और प्रतिरोध की शक्ति बन जाती है।

भारतीय इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाएँ नारी के शौर्य और स्वाभिमान का उदाहरण हैं। धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों में दुर्गा और चंडी जैसी शक्तियों का स्वरूप भी नारी की सामर्थ्य और अन्याय के प्रतिरोध का प्रतीक माना गया है।

नारी की कोमलता उसकी कमजोरी नहीं है। उसके भीतर संवेदना के साथ निर्णय लेने, परिस्थितियों से संघर्ष करने और अपने अस्तित्व की रक्षा करने की क्षमता भी है। वह अन्याय के सामने झुकने के बजाय स्वाभिमान की हुंकार बन सकती है।

आधुनिक नारी : आत्मनिर्भरता की ओर

आधुनिक समय में नारी ने जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन, विज्ञान, अंतरिक्ष, रक्षा, राजनीति, उद्योग, बैंकिंग, कला, साहित्य और उद्यमिता—ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ महिलाओं ने अपनी क्षमता का परिचय न दिया हो।

रसोई के चूल्हे से लेकर अंतरिक्ष अभियान तक की यात्रा केवल स्थान परिवर्तन की कहानी नहीं है, बल्कि यह बदलती सामाजिक चेतना का संकेत भी है। आज नारी अपनी शिक्षा और प्रतिभा के आधार पर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का प्रयास कर रही है तथा अपने निर्णय स्वयं लेने की दिशा में आगे बढ़ रही है।

आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल कमाई करना नहीं है। आर्थिक स्वतंत्रता के साथ-साथ निर्णय लेने की स्वतंत्रता, शिक्षा का अधिकार, अपने समय पर अधिकार और सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

आर्थिक समानता और दोहरा बोझ

नारी की आर्थिक भागीदारी बढ़ी है, लेकिन समानता का प्रश्न अभी समाप्त नहीं हुआ है। अनेक महिलाओं को आज भी घर और कार्यस्थल की दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। पेशेवर जीवन की अपेक्षाओं के साथ परिवार, बच्चों और घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी भी प्रायः उनके हिस्से में अधिक आती है।

यह दोहरा बोझ केवल समय की समस्या नहीं है; यह मानसिक और शारीरिक दबाव का कारण भी बन सकता है। इसलिए घरेलू कार्यों और पारिवारिक जिम्मेदारियों को केवल महिला का दायित्व मानने के बजाय परिवार के सभी सदस्यों की साझा जिम्मेदारी के रूप में देखना आवश्यक है।

आर्थिक क्षेत्र में समान अवसर और समान कार्य के लिए समान पारिश्रमिक भी लैंगिक समानता के महत्वपूर्ण आधार हैं। महिलाओं की प्रतिभा का मूल्यांकन उनके लिंग के आधार पर नहीं, बल्कि उनकी योग्यता और कार्यक्षमता के आधार पर होना चाहिए।

अधिकार और कानूनी संरक्षण

भारतीय संविधान समानता और गरिमा के सिद्धांतों को महत्व देता है। महिलाओं की सुरक्षा और अधिकारों के लिए घरेलू हिंसा से संरक्षण, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न से सुरक्षा तथा पैतृक संपत्ति में अधिकार जैसे विभिन्न कानूनी प्रावधान मौजूद हैं।

राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व ने स्थानीय स्तर पर महिला नेतृत्व को अवसर दिया है। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने का प्रश्न भी लंबे समय से सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा रहा है।

हालाँकि केवल कानून बना देना पर्याप्त नहीं है। कानून की जानकारी, प्रभावी क्रियान्वयन, सामाजिक जागरूकता और न्याय तक सहज पहुँच—इन सभी का होना आवश्यक है।

सुरक्षा और बदलती मानसिकता

आधुनिक नारी अपने अधिकारों के प्रति पहले की तुलना में अधिक जागरूक है। वह केवल त्याग और बलिदान की पारंपरिक छवि में स्वयं को सीमित नहीं करना चाहती। उसके लिए शिक्षा, करियर, आर्थिक स्वतंत्रता, व्यक्तिगत निर्णय और आत्मसम्मान भी महत्वपूर्ण हैं।

फिर भी महिलाओं की सुरक्षा आज एक गंभीर सामाजिक प्रश्न है। घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, सार्वजनिक स्थानों पर असुरक्षा और साइबर उत्पीड़न जैसी समस्याएँ यह संकेत देती हैं कि सामाजिक सोच में परिवर्तन अभी अधूरा है।

नारी को स्वतंत्रता देने की बात तभी सार्थक होगी, जब उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाज सहजता से स्वीकार करे। उसके पहनावे, व्यवहार, करियर या जीवन-निर्णयों को लेकर अनावश्यक सामाजिक नियंत्रण के बजाय उसकी गरिमा और स्वायत्तता का सम्मान होना चाहिए।

नारी को देवी नहीं, मनुष्य के रूप में सम्मान

नारी को देवी कहकर सम्मानित करना हमारी सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा हो सकता है, लेकिन वास्तविक सम्मान उससे आगे की बात है। नारी को केवल माँ, पत्नी, बहन या बेटी के रिश्तों में देखने के बजाय एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है।

उसकी इच्छाएँ हैं, सपने हैं, असहमति है, निर्णय हैं और अपनी पहचान बनाने की आकांक्षा भी है। इसलिए उसके त्याग की प्रशंसा करने के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि उसके हिस्से का अधिकार और अवसर उसे मिले।

नारी को सुरक्षा की आवश्यकता अवश्य है, लेकिन सुरक्षा के नाम पर उसकी स्वतंत्रता सीमित करना समाधान नहीं है। वास्तविक आवश्यकता ऐसे सामाजिक वातावरण की है जहाँ पुरुष और नारी दोनों समान गरिमा, अधिकार और जिम्मेदारी के साथ जीवन जी सकें।

******** निष्कर्ष ********

नारी सृष्टि का सृजनात्मक पक्ष है तो संघर्ष की शक्ति भी; वह ममता की कोमलता है तो अन्याय के विरुद्ध उठती हुई आवाज़ भी। इतिहास में उसने बंधनों का सामना किया, वर्तमान में उसने अनेक सीमाएँ पार की हैं और भविष्य में वह समाज के विकास में और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

आज आवश्यकता नारी को केवल पूजने की नहीं, समझने और सम्मान देने की है; केवल उसकी उपलब्धियों का उत्सव मनाने की नहीं, बल्कि उसके संघर्षों को पहचानने की है।

जब नारी शिक्षित, सुरक्षित, आत्मनिर्भर और निर्णय लेने में स्वतंत्र होती है, तब उसका सशक्तीकरण केवल उसके व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहता। उसका प्रभाव परिवार, समाज और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचता है।

अतः नारी को किसी विशेषण में बाँधने के बजाय उसे उसके संपूर्ण मानवीय अस्तित्व के साथ स्वीकार करना ही वास्तविक प्रगति की दिशा है।

नारी को सम्मान केवल इसलिए नहीं कि वह नारी है,
बल्कि इसलिए कि वह एक पूर्ण मनुष्य है।यदि इसे पत्रिका/साहित्यिक प्रकाशन के लिए अधिक प्रभावशाली आलेख बनाना हो, तो इसमें 2–3 प्रमाणिक उद्धरण, समकालीन उदाहरण और एक सशक्त साहित्यिक भूमिका जोड़कर इसे और उत्कृष्ट बनाया जा सकता है।

- अंजनी मिश्रा

लेखक परिचय

नाम – अंजनी मिश्रा

निवास – वाराणसी (उत्तरप्रदेश)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**अंजनी मिश्रा**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...